इस ने औरों को बचाया

एक ख़ूनी का क़िस्सा

इस ने औरों को बचाया

एक ख़ूनी का क़िस्सा

is ne auroṅ ko bachāyā. ek ḳhūnī kā qissa

He Saved Others. The Story of a Murderer
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

एक ख़ूनी का क़िस्सा

क़फ़क़ाज़ (कॉकस) के पहाड़ी इलाक़े में दो यतीम नौजवान रहते थे। बड़ा भाई ख़ुदापरस्त और नेक चाल-चलन का था। लेकिन छोटा भाई मुख़तलिफ़ था। बड़े भाई की ख़ुदापरस्त ज़िंदगी उसे बहुत बदमज़ा मालूम होती थी, और वह उसकी नसीहतों और कोशिशों से उकता गया था। अकसर स्कूल से भागकर पतंग उड़ाने और जुआ खेलने में घंटों मगन रहता था। फिर बड़े भाई ने कोशिश की कि उसे कोई पेशा सिखाया जाए, लेकिन यह भी बेसूद। ग़रज़ छोटे भाई का चाल-चलन बिगड़ता चला गया, यहाँ तक कि वह शराबी, जुआरी और चोर बन गया। उसके यार दोस्त उसे बहुत दफ़ा आधी रात को नशे की हालत में घर पहुँचाया करते थे। बड़े भाई ने बहुत समझाया, बहुत धमकाया, बहुत दुआ की और रो रोकर मिन्नत भी की कि “ऐ भाई तू क्यों मेरी और अपनी ज़िंदगी

का नुक़सान कर रहा है?" लेकिन जितना ज़्यादा वह उसे समझाता था वह उतना ही ज़्यादा बिगड़ता चला जाता था।

एक रात को बड़ा भाई सो रहा था कि दरवाज़े पर शोर हुआ। जब दरवाज़ा खोलने गया तो छोटा भाई अंदर घुस आया। सरतापा ख़ूनआलूद, कपड़े, हाथ और मुँह ख़ून से लाल। थरथराता हुआ अपने बड़े भाई से कहने लगा, "मुझे जल्द कहीं छुपा दे। मैंने अभी एक शख़्स को शराबख़ाने में मार डाला है, और पुलिस मेरा पीछा कर रही है।"

बड़े भाई ने कहा, "यहाँ छुपने की जगह कहाँ? ख़ैर अंदर आओ, मुँह हाथ साफ़ करो और ख़ूनआलूद कपड़े उतार दो।" यह कहकर उसने दरवाज़ा बंद करके अपने कपड़े उतार दिए। जब छोटा भाई मुँह हाथ धो चुका तो बड़े भाई ने अपने साफ़ कपड़े उसे पहना दिए और उसके ख़ूनआलूदा कपड़े ख़ुद पहन लिए।

दरवाज़े पर फिर शोर होने लगा। अपने छोटे भाई को एक अलमारी में बंद करके वह दरवाज़ा खोलने गया तो पुलिस के सिपाही अंदर घुस आए और उसको गिरिफ़्तार करके कहने लगे, "ख़ूनी! ख़ूनी! इसके कपड़ों को देखो।" यह कहकर उसे गिरिफ़्तार कर लिया और जेलख़ाने में ले जाकर बंद कर दिया।

सुबह को उसे अदालत में हाज़िर किया गया। मजिस्ट्रेट ने पूछा, "तुमने क्या किया है?"

उसने कहा, “हुज़ूर, मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि इस जुर्म के लिए मुझे फाँसी दिया जाएगा।”

“अच्छा अपना बयान दो।”

“हुज़ूर, और कुछ नहीं कहना चाहता।”

बहुत कोशिश की गई कि वह मज़ीद बयान करे लेकिन बेसूद। आख़िर में मजिस्ट्रेट ने मजबूर होकर फाँसी का हुक्म दे दिया, और सिपाही उसे क़ैदख़ाने तक ले गए।

फाँसी मिलने से एक दिन पहले शाम के वक़्त बड़े भाई ने पहरेवाले से कहा, “दारोग़े साहिब से कहना कि मैं उनसे थोड़ी देर के लिए मिलना चाहता हूँ।” जब दारोग़ा आया तो उसने कहा, “दारोग़े साहिब, मेरी आख़री दरख़ास्त यह है कि मुझे अपने छोटे भाई को चिठी लिखने की इजाज़त दी जाए और इस चिठी को मेरे भाई के सिवा और कोई न खोले। क्या आप मेरी इस दरख़ास्त को मनज़ूर फ़रमाएँगे?”

दरख़ास्त मनज़ूर हुई और क़ैदी ने चिठी लिखकर पहरेवाले के हाथ दारोग़े के पास भेज दी। उसने चिठी लेकर मेज़ पर रख दी। जब सुबह हुई तो क़ैदी अपने छोटे भाई के ख़ूनआलूदा कपड़े पहनकर फाँसी पर चढ़ गया और अपनी जान दे दी। इस तरह उसने भाई को बचा लिया, लेकिन अपने आपको न बचा सका।

इधर उसकी चिठी चपरासी के हाथ उसके छोटे भाई को भेज दी गई। जब उसने चिठी देखी तो फ़ौरन अपने बड़े भाई के दस्तख़त पहचान लिए और लिफ़ाफ़ा खोलकर पढ़ने लगा।

> मेरे अज़ीज़ छोटे भाई!
>
> कल सुबह मैं तुम्हारे ख़ूनआलूदा कपड़े पहने तुम्हारे एवज़ अपनी जान दूँगा। लेकिन मैं बड़ी ख़ुशी और मुहब्बत से अपने आपको क़ुरबान कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे कामिल उम्मीद है कि तुम मेरे साफ़ और बेदाग़ कपड़े पहनकर ऐसी ज़िंदगी बसर करोगे जिससे हमारे ख़ानदान और नाम की इज़्ज़त होगी और मेरी इस मुहब्बत की याद में तुम अपने गुनाहों को तर्क कर दोगे।
>
> तुम्हारा प्यारा भाई

ख़त पढ़ते ही छोटे भाई के दिल पर इतना असर हुआ कि वह मुँह के बल गिर पड़ा और ज़ार ज़ार रोने लगा। फिर दौड़कर जेलख़ाने की तरफ़ गया और अपने भाई की चिठी दारोग़ो को दिखाकर कहने लगा, “अफ़सोस, अफ़सोस कि मैं अपने बड़े भाई की मौत का बाइस हुआ। मुझे भी क्यों न फाँसी दिया जाए। मैं हरगिज़ ज़िंदा रहने का हक़दार नहीं।”

छोटे भाई को भी मजिस्ट्रेट के सामने अदालत में हाज़िर किया गया और उसने सारी वारिदात कह सुनाई। मजिस्ट्रेट ने हाकिमे-बाला से मशवरा करके यह फ़ैसला सुनाया कि "बड़े भाई की अजीबो-ग़रीब और पुर-मुहब्बत क़ुरबानी को आफ़रीन कहते हुए हमारा यही फ़ैसला है कि अगर यह नौजवान अपने भाई की मुहब्बत और क़ुरबानी को याद रखते हुए आइंदा अपनी ज़िंदगी को सुधार ले और नेक चाल-चलन इख़्तियार कर ले तो हम सज़ा का फ़तवा नहीं देते।"

छोटे भाई ने रो रोकर कहा, "जज साहिब, मैं कैसे दुबारा उन गुनाहों की तरफ़ मायल हो सकता हूँ जिनके सबब से मेरे अज़ीज़ भाई ने अपनी जान मेरे बदले क़ुरबान कर दी?" उसके जान-पहचान यह कहते हैं कि उस दिन से उसका चाल-चलन बिलकुल तबदील हो गया और ऐसी बेऐब और पाक ज़िंदगी बसर करने लगा कि नेकी, दियानतदारी, शराफ़त और ख़ुदापरस्ती में अपने भाई पर भी सबक़त ले गया।

जहन्नुम के लायक़

छोटे भाई की तरह हमें भी गुनाह की सज़ा के बारे में तालीम दी गई है। अल्लाह ने हमें बड़ी सफ़ाई से बताया है कि गुनाह का अज्र मौत

है और कि इसकी सज़ा निहायत हौलनाक है। लेकिन इन बातों के समझाने से हम नहीं समझते और न ही अपना चाल-चलन दुरुस्त करते हैं। नतीजे में हम अपनी और दूसरों की ज़िंदगी को गुनाह की ज़ंजीरों से जकड़कर जहन्नुम के लायक़ हैं। हम धोका देकर सच्चाई का ख़ून करते हैं, नापाकी के फ़ेलों से पाकीज़गी का सत्यानास करते हैं, बदी करके नेकी को बरबाद करते हैं और बेइनसाफ़ी और रिश्वत से इनसाफ़ का ख़ून कर देते हैं। अज़ीज़ क़ारी, क्या नेकी, इनसाफ़, पाकीज़गी और सच्चाई का ख़ून कोई छोटी सी बात है? इस क़िस्म के ख़ून की सज़ा ख़ुदा बहुत ख़ौफ़नाक सूरत में बयान करता है। हम सच्चाई, पाकीज़गी और मुहब्बत के ख़ूनी साबित हुए हैं। इस वजह से हम पर सज़ा का हुक्म हो चुका है। तो भी हमारा ख़ुदावंद हमारी मौत और हलाकत से ख़ुश नहीं। इसलिए वह चाहता है कि गुनाह की सज़ा से हमें बचाए और माफ़ी बख़्शे।

उन्होंने हमारी सज़ा ख़ुद उठाई

लेकिन माफ़ी बख़्शने से माफ़ी बख़्शनेवाला मुजरिम की सज़ा ख़ुद बरदाश्त करता है। जो इनसान के गुनाहों को माफ़ करना चाहे, लाज़िम है कि वह उनके गुनाहों का एवज़ाना ख़ुद दे। क्योंकि जो औरों को बचाता है वह ख़ुद उस दुख और तकलीफ़ से नहीं

बच सकता। जब हज़रत ईसा सलीब पर लटके हुए थे तो उनके सतानेवाले उन्हें ठट्ठों में उड़ाते हुए कहने लगे कि "अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो सलीब पर से उतर आ कि हम भी ईमान लाएँ।" फिर सर हिला हिलाकर कहने लगे, "इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता।" क्या ख़ूब कहा! उनके दुश्मन नहीं जानते थे कि इन्हीं अलफ़ाज़ पर तो इंजील की हक़ीक़त का दारो-मदार है। माफ़ करने का हक़ वही हासिलकर सकता है जो मुजरिम के एवज़ अदल के तक़ाज़े को पूरा करे। हुज़ूर अल-मसीह को यह हक़ इसलिए हासिल है कि आपने अपनी जान गुनाहगार के एवज़ क़ुरबान कर दी। उन्होंने गुनाहगार को माफ़ी बख़्शने का हक़ सलीबी मौत से हासिल किया।

क्या माफ़ी का उम्मीदवार और माफ़ी देनेवाला दोनों मुजरिम की सज़ा से बच सकते हैं? अगर मैं किसी से माफ़ी चाहूँ तो ज़ाहिर है कि मैंने उसका कुछ नुक़सान किया है। अगर वह मुझे माफ़ करे तो इसका मतलब है कि वह इस नुक़सान को ख़ुद बरदाश्त करता है। यह बात पक्की है कि जो औरों को माफ़ करता और उनको बचाता है वह आप नहीं बच सकता। हुज़ूर अल-मसीह ख़ुद न बच सके, क्योंकि दूसरों को बचाना चाहते थे। चुनाँचे सलीबी मौत से उन्होंने गुरेज़ न किया बल्कि पुकारकर कहा कि इन मेरे क़त्ल करनेवालों को माफ़ कर क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या करते हैं।

चुनाँचे अदालते-इलाही का फ़ैसला यह है कि जो कोई अल-मसीह की इस अजीबो-ग़रीब मुहब्बत और क़ुरबानी पर ईमान लाए और अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करे वह माफ़ी पाएगा। क्योंकि लिखा है कि

> हम अभी कमज़ोर ही थे तो मसीह ने हम बेदीनों की ख़ातिर अपनी जान दे दी। मुश्किल से ही कोई किसी रास्तबाज़ की ख़ातिर अपनी जान देगा। हाँ, मुमकिन है कि कोई किसी नेकूकार के लिए अपनी जान देने की जुर्रत करे। लेकिन अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत का इज़हार यों किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी ख़ातिर अपनी जान दी जब हम गुनाहगार ही थे। हमें मसीह के ख़ून से रास्तबाज़ ठहराया गया है। तो यह बात कितनी यक़ीनी है कि हम उसके वसीले से अल्लाह के ग़ज़ब से बचेंगे। (रोमियों 5:6-9)

अगर आप गुनाहों की माफ़ी हासिल करना चाहें तो आज ही यह दुआ करें, “ऐ ख़ुदा, मैं तेरा बड़ा गुनाहगारो-नालायक़ बंदा हूँ। मैंने गुनाह करके नेकी का ख़ून किया और नापाकी को दिल में जगह देकर तुझे ग़ुस्सा दिलाया और तुझे बहुत रंजीदा किया। इस में शक नहीं कि मैं सज़ा के लायक़ हूँ। लेकिन आज मैं ईमान लाता

हूँ कि हज़रत ईसा मेरे गुनाहों की ख़ातिर क़ुरबान हुए। मैं तेरे पास आता हूँ, तू हुज़ूर अल-मसीह के नाम की ख़ातिर मुझे माफ़ कर और उनके ख़ून से मेरे दिल को धो डाल और गुनाह की ग़ुलामी से रिहाई बख़्श। मैं हज़रत ईसा के नाम में यह दुआ माँगता हूँ। आमीन।"